ॐ

मानस - अनुक्रमणिका

गोस्वामी तुलसीदास विरचित श्रीरामचरितमानस की
पंक्तियों का अकारादि क्रम के अनुसार संदर्भ कोश
(आधार : गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित ग्रंथ)

परामर्शदाता :
आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री

संयोजक :
कृष्ण स्वरूप दीक्षित

सम्पादक :
डॉ० प्रेमशंकर त्रिपाठी
डॉ० उषा द्विवेदी

प्रकाशक :
श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय
कलकत्ता

प्रकाशक :
श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय
१सी, मदन मोहन बर्मन स्ट्रीट
कलकत्ता - ७०० ००७
दूरभाष : २३८-८२१५

❑

अप्रैल १९९८
२५०० प्रतियाँ

❑

प्रकाशन समिति :
जुगल किशोर जैथलिया
नेमचन्द कन्दोई
विमल लाठ
महावीर बजाज
त्रिभुवन तिवारी
तारा दूगड़

❑

मूल्य : २५० रुपए

❑

अक्षर संयोजन :
जवाहिर प्रिंट्स
१६१/१, महात्मा गाँधी रोड, कलकत्ता-७

❑

आवरण - सज्जा :
श्रीजीव अधिकारी

❑

मुद्रक :
छपते - छपते प्रकाशन प्रा. लि.
२६सी, क्रीक रो, कलकत्ता-१४

Manas Anukramanika
Rs. 250/-

तुलसी-पंचशती
के
पावन अवसर पर
तुलसी-भक्तों
को
सादर समर्पित

प्राक्कथन

गोस्वामी तुलसीदास की पंचशती के अवसर पर श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय ने अपने साहित्यिक उत्तरदायित्व का पालन करते हुए कई कार्यक्रम आयोजित किए। पंचशती-वर्ष को अविस्मरणीय बनाने के लिए एक भव्य-प्रकाशन की योजना भी हमारे मस्तिष्क में थी परन्तु गोस्वामीजी के विराट साहित्य पर ग्रंथों, स्मारिकाओं तथा प्रकाशनों का विपुल भंडार देखते हुए आलोचनात्मक ग्रंथ के प्रकाशन को लेकर ऊहापोह बना रहा।

प्रकाशन हेतु कई प्रस्ताव सामने आए किन्तु अन्त में रामचरितमानस की पंक्तियों के अकारादि क्रमानुसार संदर्भ कोश प्रकाशन की आवश्यकता पर बल देने वाला प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ। वास्तव में इस प्रकार के ग्रंथ का अभाव हर मानस-प्रेमी को खटकता रहा है।

अपने बहुमुखी गुणों के कारण श्रीरामचरितमानस जन-जन का कंठहार है। उसकी पंक्तियाँ एक ओर श्रद्धालु भक्तों के लिए मंत्र सदृश हैं तो दूसरी ओर उसकी उक्तियाँ तुलसी की टकसाल से निकली हुई प्रेरक वाणियों के रूप में सर्वसाधारण का मार्गदर्शन हर परिस्थिति में करती रहती हैं। मानस एवं मानसकारं की लोकप्रियता का अन्दाजा इसी बात से लग जाता है कि सामान्य जन संदर्भ ज्ञात न होने पर भी मानस की पंक्तियों का धड़ल्ले से प्रयोग करते रहते हैं। फिर भी कभी-कभी उद्धृत करनेवाले को समग्र संदर्भ की या पाठ संबंधी शंका उत्पन्न होने पर शुद्ध पाठ के ज्ञान की उत्कंठा बनी रहती है। वे विद्वज्जन भी ऐसी आवश्यकता का अनुभव करते हैं जो अपने आलेखों में पंक्तियों का शुद्ध पाठ तथा सही संदर्भ प्रस्तुत करना चाहते हैं।

इन परिस्थितियों का सामना करने वाले सहृदय पाठक हमारी इस बात से सहमत होंगे कि इस विराट ग्रंथ की पंक्ति-विशेष का संदर्भ खोजना कितना दुरूह कार्य है। शायद ही कोई ऐसा मानसप्रेमी होगा जिसे इस स्थिति से गुजरकर श्रीरामचरितमानस की अनुक्रमणिका की आवश्यकता का अनुभव न हुआ हो।

इसी अभाव की पूर्ति के लिए पावन तुलसी पंचशती वर्ष में श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय ने 'मानस अनुक्रमणिका' प्रकाशन का संकल्प किया। यह ठीक है कि मानस-अनुक्रमणिका का प्रकाशन हमारा कोई अनूठा या प्रथम प्रयास नहीं है। इस ग्रंथ से पूर्व भी इस

दिशा में दो-तीन प्रकाशन हमारी दृष्टि में आये हैं। शाहजहाँपुर से सं० २०२७ में प्रकाशित 'श्रीरामचरितमानस वर्णानुक्रमणिका' (*रचयिता: मोहिनी श्रीवास्तव*) तथा सागर (म०प्र०) से सं० २०३९ में प्रकाशित 'मानस मुक्ता' (*संपादक : मुरलीधर अग्रवाल*) ग्रंथ इस सन्दर्भ में विशेष उल्लेखनीय हैं। इन प्रकाशनों की प्रसार-संख्या अत्यंत सीमित होने के कारण ये सर्वसुलभ नहीं हैं। अधिसंख्य मानस-प्रेमियों को इस प्रकार के प्रकाशन की जानकारी भी नहीं है। हमारे इस प्रकाशन से मानस-प्रेमियों की आवश्यकता की कुछ मूर्ति अवश्य होगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

अपने पूर्ववर्ती प्रकाशकों तथा संपादकों के प्रति कृतज्ञता अर्पित करते हुए उनकी निष्ठा तथा समर्पण भाव के प्रति हम अपनी प्रणति निवेदित करते हैं। हम विशेष रूप से आभारी हैं उन सहयोगियों के, जिनके आर्थिक सौजन्य से यह ग्रंथ प्रकाशित हो सका है। हम कृतज्ञ हैं गीता प्रेस, गोरखपुर के भी, जिनके द्वारा मुद्रित 'श्रीरामचरित- मानस' को इस अनुक्रमणिका का आधारग्रंथ बनाया गया है।

भक्तों की दृष्टि में 'श्रीरामचरितमानस' भगवान श्रीराम का वाङ्मय रूप है। प्रभु का यह रूप श्रद्धालु जन यथोचित रूप से ग्रहण कर सकें यही इस प्रकाशन की मूल भावना है।

पूरी सावधानी एवं प्रयासों के बावजूद इस ग्रंथ में त्रुटियाँ रह जाना असम्भव नहीं है, हमें विश्वास है कि सुधी पाठक 'संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि वारि विकार' की भावना से हमें क्षमा करेंगे और त्रुटि की सूचना लिखित रूप से हमें देने की कृपा करेंगे ताकि अगले संस्करण में हम उसे सुधार सकें।

हमारा यह प्रयास श्रीरामचरितमानस के उन पाठकों को अवश्य संतोष प्रदान करेगा जो वर्षों से ऐसी अनुक्रमणिका की आवश्यकता का अनुभव कर रहे थे। हमें विश्वास है कि भावुक भक्त, सहृदय पाठक तथा सुधी साहित्यकार इस प्रकाशन का स्वागत करेंगे।

श्रीरामनवमी सं० २०५५
कलकत्ता, ५ अप्रैल १९९८

— *संपादकद्वय*

पाठ संकेत

यह ग्रंथ दो भागों में विभाजित है। प्रथम खंड में अर्द्धाली के प्रथम अंश को तथा द्वितीय खण्ड में अर्द्धाली के द्वितीय अंश को अकारादि क्रम से प्रस्तुत किया गया है। उदाहरणार्थ :

सीय राम मय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी ।।१-७।२

इस अर्द्धाली का पहला अंश **'सीयराम मय सब जग जानी'** प्रथम खण्ड (*आद्याक्षरी*) में है तथा दूसरा अंश **'करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी'** द्वितीय खण्ड (*मध्याक्षरी*) के अन्तर्गत रखा गया है।

प्रत्येक पंक्ति के बाद जो संख्याएँ दी गई हैं उनका विश्लेषण पाठक को इस रूप में करना चाहिए :– प्रारंभिक संख्या १ का तात्पर्य प्रथम सोपान अर्थात् बालकाण्ड से है। मध्य में आई संख्या ७ का संकेत दोहा संख्या से लेना चाहिए तथा परवर्ती संख्या २ का तात्पर्य दोहे के बाद की दूसरी पंक्ति से लगाना चाहिए। इस प्रकार ऊपर छपी पंक्ति के पार्श्व में मुद्रित संख्या १-७।२ का अर्थ हुआ – *बालकाण्ड के सातवें दोहे के बाद की दूसरी पंक्ति।*

दोनों खण्डों में पंक्ति के ठीक बाद लिखी १,२,३,४,५,६,७ संख्याएँ क्रमशः बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड का संकेत देती हैं।

छंदों, सोरठों, दोहों की आरंभिक आधी पंक्ति को आद्याक्षरी में ही रखा गया हैं। मध्याक्षरी में केवल चौपाइयाँ ही संकलित हैं। श्लोकों के लिए संदर्भ में 'श्लोक' का प्रयोग किया गया है।

ग्रंथ में दोहों की मुद्रित संख्या के पूर्व जो छंद या सोरठे आदि आए हैं उनकी गणना पूर्ववर्ती दोहे के क्रमांक के बाद पंक्ति के अनुसार की गयी है। उदाहरणार्थ सुन्दरकाण्ड में तीसरे दोहे के पूर्व १२ पंक्तियों का छंद है– **कनक कोट विचित्र मनिकृत सुंदरायतना घना**। इस छंद की अंतिम पंक्ति 'रघुवीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही' का संकेत दूसरे दोहे के बाद आई ११ चौपाइयों के बाद १२ जोड़कर अर्थात् ५-२।२३ के अनुसार दिया गया है। कांड के प्रारंभ में प्रथम दोहे के पूर्व की पंक्तियां ० (शून्य) के बाद रखी गई हैं।

●

ॐ

श्री गणेशाय नमः



श्री जानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस - अनुक्रमणिका

प्रथम खण्ड : आद्याक्षरी

अ

अइसेउ एक तिन्हहि जे खाहीं । ६-३।६
अकथ अलौकिक तीरथराऊ । १-१।१३
अकल अगुन अज अनघ अनामय । ६-१०९।६
अकल अनीह अनाम अरूपा । ७-११०।४
अखिल बिस्व यह मोर उपाया । ७-८६।७
अग जग जीव नाग नर देवा । ७-९३।७
अग जगमय जग मम उपराजा । ७-५९।५
अग जगमय सब रहित बिरागी । १-१८४।७
अगनित भुवन फिरेउँ प्रभु । ७-८१।०क
अगनित रबि ससि सिव चतुरानन । १-२०१।१
अगनित लोकपाल जम काला । ७-७९।६
अगम देखि नृप अति पछिताई । १-१५६।८
अगम पंथ बन भूमि पहारा । २-९७।७
अगम सनेह भरत रघुबर को । २-२४०।५
अगम सबहि बरनत बरबरनी । २-२८८।१
अगमु पंथु गिरि कानन भारी । २-१११।६

अग्य अकोबिद अंध अभागी । १-११४।१
अग्य जानि रिस उर जनि धरहू । १-१०८।२
अग्या पुनि पुनि भाइन्ह दीन्ही । १-३५५।६
अग्या सम न सुसाहिब सेवा । २-३००।४
अगर धूप बहु जनु अँधिआरी । १-१९४।५
अगवानन्ह जब दीखि बराता । १-३०४।७
अगुन अखंड अनंत अनादी । १-१४३।४
अगुन अदभ्र गिरा गोतीता । ७-७१।५
अगुन अमान जानि तेहि । ६-३१।०क
अगुन अमान मातु पितु हीना । १-६६।८
अगुन अरूप अलख अज जोई । १-११५।२
अगुन अलेप अमान एकरस । २-२१८।६
अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा । १-२२।१
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी । १-२०।८
अगुन सगुन गुन मंदिर सुंदर । ६-११४।३
अघ अवगुन छमि आदरहिं । २-२३३।०

सौजन्य - आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, २८० चित्तरंजन एवेन्यू, कलकत्ता - ६

सौजन्य - श्रीमती बीना दीक्षित, पी-८ डालिमतल्ला लेन, कलकत्ता-६

अपुर सेन सम नरक निकंदिनि ।१-३०।९
अहइ एक अति सुगम उपाई ।१-१६६।२
अहनिसि बिधिहि मनावत रहहीं ।७-२४।५
अहह कंत कृत राम बिरोधा ।६-३६।६
अहह तात दारुनि हठ ठानी ।१-२५७।२
अहह दैव मैं कत जग जायउँ ।६-५९।३
अहह धन्य लछिमन बड़भागी ।७-०।३
अहह नाथ रघुनाथ सम ।६-१०४।०
अहह बन्धु तैं कीन्हि खोटाई ।६-६२।४
अहह मंद मनु अवसर चूका ।२-१४३।६
अहि अघ अवगुन नहिं मनि गहई ।२-१८३।८
अहिप महिप जहँ लगि प्रभुताई ।२-२५३।७
अहो धन्य तव जन्मु मुनीसा ।१-१०३।४
अहोभाग्य मम अमित अति ।५-४७।०
अहंकार अति दुखद डमरुआ ।७-१२०।३५
अहंकार सिव बुद्धि अज ।६-१५।क
अत्रि आदि मुनिबर बहु बसहीं ।२-१३१।७
अत्रि कहेउ तब भरत सन ।२-३०९।०
अत्रि के आश्रम जब प्रभु गयऊ ।३-२।४
अत्रि सुनायउ रघुबरहि ।२-३१०।०

आ

आइ गए बगमेल ।३-१८।०
आइ गयउ हनुमान ।६-६१।०
आइ नहाए सरित बर ।२-१३२।०
आइ पाय पुनि देखिहउँ ।२-५३।०
आइ बना भल सकल समाजू ।२-२२९।५
आइ बिभीषन पुनि सिरु नायो ।६-१०५।१
आइ राम पद नावहिं माथा ।४-२१।२
आइ सबन्हि नावा पद सीसा ।५-२८।३
आए कपि सब जहँ रघुराई ।७-६६।६
आए कीस काल के प्रेरे ।६-३९।३
आए देखन चापमख ।१-२२१।०
आए देव सदा स्वारथी ।६-१०९।२
आए निकट देखि अनुरागे ।२-२७४।६
आए ब्याहि रामु घर जब तें ।१-३६०।५
आए भरत संग सब लोगा ।७-४।१
आए मिलन सिद्ध मुनि ग्यानी ।१-१४२।६
आए मुनिबर निकर तब ।१-३३०।०
आकर चारि जीव जग अहहीं ।१-४५।४
आकर चारि लच्छ चौरासी ।७-४३।४
आकर चारि लाख चौरासी ।१-७।१
आखर अरथ अलंकृति नाना ।१-८।९
आखर मधुर मनोहर दोऊ ।१-१९।१
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना ।१-१०२।८
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना ।२-२९२।७
आगम निगम पुरान अनेका ।७-४८।३
आगिल काजु बिचारि बहोरी ।२-११।७
आगिलि बात समुझि डरु मोही ।२-१७।८
आगें कह मृदु बचन बनाई ।४-६।७
आगें किए निषाद गन ।२-२०२।०
आगें कै हनुमंतहि लीन्हा ।४-२३।८
आगें चले बहुरि रघुराया ।४-०।१
आगें दीखि जरत रिस भारी ।२-३०।१
आगें देखि राम तन स्यामा ।३-९।२०
आगें परा गीधपति देखा ।३-२९।१८
आगें मुनिबर बाहन आछें ।२-२२०।५
आगें राम अनुज पुनि पाछें ।३-६।२
आगें रामु लखनु बने पाछें ।२-१२२।१

इहाँ बसत मोहि सुनु खग ईसा ।७-११३।१०
इहाँ बिचारहिं कपि मन माहीं ।४-२५।१
इहाँ बिभीषन मंत्र बिचारा ।६-७४।३
इहाँ बिभीषन सब सुधि पाई ।६-८४।१
इहाँ भएँ मैं देखउँ भाई ।६-५६।६
इहाँ भरतु सब सहित सहाए ।२-२३२।४
इहाँ भानुकुल कमल दिवाकर ।७-३।१
इहाँ मोह कर कारन नाहीं ।७-७१।८
इहाँ राम अंगदहि बोलावा ।६-३७।३
इहाँ राम जसि जुगुति बनाई ।३-२२।८
इहाँ साप बस आवत नाहीं ।४-५।१३
इहाँ सुबेल सैल रघुबीरा ।६-१०।१
इहाँ सेतु बाँध्यों अरु ।६-११९।क
इहाँ संभु अस मन अनुमाना ।१-५१।५
इहाँ हरी निसिचर बैदेही ।४-१।३
इहाँ हिमाचल रचेउ बिताना ।१-९३।२

ई

ईति भीति धनु प्रजा दुखारी ।२-२३४।३
ईस प्रसाद असीस तुम्हारी ।२-२८२।१
ईस भजनु सारथी सुजाना ।६-७९।७
ईस रजाइ सीस सबही कें ।२-२८१।५
ईस्वर अंस जीव अबिनासी ।७-११६।२
ईश्वर जीव भेद प्रभु ।३-१४।०
ईस्वर राखा धरम हमारा ।१-१७३।२

उ

उग्र बचन सुनि सकल डेराने ।६-४१।९
उग्र बिलोकनि प्रभुहि बिलोका ।६-६९।१२
उघरहिं अंत न होइ निबाहू ।१-६।६
उघरहिं बिमल बिलोचन ही के ।१-०।७
उचित कि अनुचित किएँ बिचारू ।२-१७६।४
उचित होइ सोइ कीजिअ नाथा ।२-२८९।६
उठइ धूरि मानहुँ जल धारा ।६-८६।६
उठहु बेगि सोइ करहु उपाई ।२-४९।८
उठहु राम भंजहु भव चापा ।१-२५३।६
उठा प्रबल पुनि मुरुछा जागी ।६-८२।८
उठि उठि पहिरि सनाह अभागे ।१-२६५।२
उठि कर जोरि रजायसु मागा ।२-२२९।१
उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया ।५-१८।९
उठि बहोरि मारुति जुबराजा ।६-७५।८
उठी रेनु रबि गयउ छपाई ।६-७८।७
उठे भरत गुर बचन सुनि ।२-१६९।०
उठे राम सुनि पेम अधीरा ।२-२३९।८
उठे लखनु निसि बिगत सुनि ।१-२२६।०
उठे लखनु प्रभु सोवत जानी ।२-८९।१
उठे सकल जब रघुपति आए ।१-२१४।६
उठे सभासद कपि कहुँ देखी ।६-१८।८
उठे हरषि सुखसिंधु महुँ ।१-३०७।०
उत पचार दसकंधर ।६-८०।ग
उत रावन इत राम दोहाई ।६-४०।७
उतपात अमित बिलोकि नभ सुर ।६-१०१।१३
उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती ।६-१९।३
उत्तम के अस बस मन माहीं ।३-४।१२
उत्तम मध्यम नीच लघु ।१-२४०।०
उतर देत छोड़उँ बिनु मारें ।१-२७४।७
उतरु काह दैहउँ तेहि जाई ।६-६०।१६
उतरु देइ सुनि स्वामि रजाई ।२-२६८।५
उतरु देउँ केहि बिधि केहि केही ।२-१८०।४
उतरु देत मोहि बधब अभागें ।३-२५।६

सौजन्य - श्री रमेश बेरीवाल, १६७, चित्तरंजन एवेन्यू, कलकत्ता-७

सौजन्य – श्री किशनलाल भुवालका, १६१/१, महात्मा गाँधी रोड, कलकत्ता-७

एहि भाँति सिधारी गौतम नारी ।१-२१०।१५
एहि महँ रघुपति नाम उदारा ।१-९।१
एहि महँ रुचिर सप्त सोपाना ।७-१२८।३
एहि मिस मोहि उपदेसेहु ।६-८०।ख
एहि राज साज समेत सेवक ।१-३२५।१६
एहि लागि तुलसीदास इन्ह की ।५-२।२२
एहि सन हठि करिहउँ पहिचानी ।५-५।४
एहि सम निपट नीच कोउ नाहीं ।२-२४२।८
एहि सुख जोग न लोग सब ।२-२८०।०
एहि सुख ते सत कोटि गुन ।१-३५०।क
एहि सुख सुधाँ सींचि सब काहू ।२-२७२।८
एहि संदेस सरिस जग माहीं ।७-१।१३
एहिं कलिकाल न साधन दूजा ।७-१२९।५
एहिं जग जामिनि जागहिं जोगी ।२-९२।३
एहिं तन राम भगति मैं पाई ।७-९४।७
एहिं तन सतिहि भेट मोहि नाहीं ।१-५६।२
एहिं थल जौं किछु कहिअ बनाई ।२-२९०।२
एहिं प्रतिपालउँ सबु परिवारू ।२-९९।७
एहिं लालसाँ मगन सब लोगू ।१-२४८।६
एहिं समाज थल बूझब राउर ।२-२९२।५
एहिं सर मम उत्तर तट बासी ।५-५९।५
एहीं बीच निसाचर अनी ।६-८६।१
एहूँ मिस देखौं पद जाई ।१-२०५।७

ऐ

ऐसिअ प्रस्न बिहंगपति ।७-५५।०
ऐसिउ पीर बिहसि तेहिं गोई ।२-२६।५
ऐसे अधम मनुज खल ।७-४०।०
ऐसे प्रभुहि बिलोकउँ जाई ।३-४०।७
ऐसेइ संसय कीन्ह भवानी ।१-४६।८
ऐसेउ प्रभु सेवक बस अहई ।१-१४३।७
ऐसेउ बचन कठोर सुनि ।२-६७।०
ऐसेहिं प्रभु सब भगत तुम्हारे ।१-२३८।३
ऐसेहिं हरि बिनु भजन खगेसा ।७-७८।१
ऐसेहु पति कर किएँ अपमाना ।३-४।९
ऐसेहुँ दुख जो राख मम प्राना ।६-९८।१०

ओ

ओर निबाहेहु भायप भाई ।२-१५१।५

औ

और एक तोहि कहउँ लखाऊ ।१-१६८।३
औरउ एक आसिषा मोरी ।७-१०८।१६
औरउ एक कहउँ निज चोरी ।१-१९५।३
औरउ एक गुपुत मत ।७-४५।०
औरउ कथा अनेक प्रसंगा ।१-३६।१५
औरउ ग्यान भगति कर ।७-११६।ख
औरउ जे हरिभगत सुजाना ।१-२९।८
औरउ राम रहस्य अनेका ।१-११०।३
औरउ सबहिं सीय समुझाई ।२-७७।६
औरु करै अपराधु कोउ ।२-७७।०
औरु करिहि को भरत बड़ाई ।२-२५६।४
औषध मूल फूल फल पाना ।२-५।२

अं

अंग अंग पर वारिअहिं ।१-२२०।०
अंगद अरु हनुमंत प्रबेसा ।६-४४।७
अंगद कहइ जाउँ मैं पारा ।४-२९।१
अंगद तहीं बालि कर बालक ।६-२०।५
अंगद दीख दसानन बैसें ।६-१८।४
अंगद नाम बालि कर बेटा ।६-२०।३
अंगद नील मयंद नल ।६-७५।०

क

कंध बाल केहरि दर ग्रीवा । ७-७६।२
कंप न भूमि न मरुत बिसेषा । ६-१३।१
कंप पुलक तन नयन सनीरा । २-६९।२
कंपहिं भूप बिलोकत जाकें । १-२९२।४
कंपहिं लोकप जाकीं त्रासा । ५-३६।४
कंपित मोहि बिलोकि अति । ७-११०७।क
कंबल बसन बिचित्र पटोरे । १-३२५।३
कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई । १-१९८।७

ख

खग कंक काक सृगाल । ३-१९।१३
खग मृग परिज़न नगरु बनु । २-६५।०
खग मृग बिपुल कोलाहल करहीं । २-१२३।८
खग मृग बृंद अनंदित रहहीं । ३-१३।३
खग मृग मगन देखि छबि होहीं । २-१२२।८
खग मृग सहज बयरु बिसराई । ७-२२।२
खग मृग हय गय जाहिं न जोए । २-१५७।७
खगपति राम कथा मैं बरनी । ७-१४।६
खगहा करि हरि बाघ बराहा । २-२३५।३
खप्परिन्ह खग्ग अलुज्झि जुज्झहिं । ६-८७।१२
खबरि लीन्ह सब लोग नहाए । २-२०३।३
खबरि लेन हम पठए नाथा । २-२७१।७
खर आरुढ़ नगन दससीसा । ५-१०।४
खर कुठार मैं अकरुन कोही । १-२७४।६
खर दूषन तिसिरा कर घाता । ३-२१।१२
खर दूषन तिसिरा बधेउ । ३-२५।०
खर दूषन पहिं गइ बिलपाता । ३-१७।२
खर दूषन बध बहुरि बखाना । ७-६५।४
खर दूषन बिराध तुम्ह मारा । ६-८९।५
खर दूषन मोहि सम बलवंता । ३-२२।२
खर दूषन सुनि लगे पुकारा । ३-२१।११
खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली । ५-२०।९
खर स्वान सुअर सृकाल मुख । १-९२।११
खर सिआर बोलहिं प्रतिकूला । २-१५७।५
खर्ब निसाचर बाँधेउ । ७-५८।०
खरभरु देखि बिकल पुर नारीं । १-२६७।१
खरभरु नगर सोचु सब काहू । २-४८।२
खल अघ अगुन साधु गुन गाहा । १-५।१
खल कामादि निकट नहिं जाहीं । ७-११९।६
खल खंडन मंडन रम्य छमा । ६-११०।२१
खल तव कठिन बचन सब सहऊँ । ६-२१।४
खल दल बिदारन परम कारन । ६-१०२।१३
खल परिहास होइ हित मोरा । १-८।१
खल बधि तुरत फिरे रघुबीरा । ३-२७।१
खल बिनु स्वारथ पर अपकारी । ७-१२०।१८
खल मनुजाद द्विजामिष भोगी । ६-४४।३
खल मल धाम काम रत रावन । ६-११३।१०
खल मंडलीं बसहु दिनु राती । ५-४५।५
खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू । १-६।४
खलन्ह हृदयँ अति ताप बिसेषी । ७-३८।३
खलानां दण्डकृद्योऽसौ । ६-श्लोक३(२)
खाइअ पहिरिअ राज तुम्हारें । २-१८।४
खाईं सिंधु गभीर अति । १-१७८।क
खाएसि फल अरु बिटप उपारे । ५-१७।४
खायउँ फल प्रभु लागी भूँखा । ५-२१।३
खाहिं निसाचर दिवस निसि । ६-३१।ख
खाहिं मधुर फल बिटप हलावहिं । ६-४।६
खाहु जाइ फल मूल सुहाए । ६-४।४
खेद खिन्न छुद्धित तृषित । १-१५७।०

ग

गयउ जहाँ बाहेर नगर । २-८२।०
गयउ दसानन मंदिर माहीं । ५-४।६
गयउ दूरि घन गहन बराहू । १-१५६।५
गयउ न गृह मन बहुत गलानी । १-१५७।४
गयउ निकट तप देखि बिधाता । १-१७६।२
गयउ बसीठी बीरबर । ७-६७।क
गयउ भवन अति सोचबस । ३-२२।०
गयउ मोर संदेह । ७-६८।क
गयउ सभा दरबार तब । ६-१८।०
गयउ सभाँ मन नेकु न मुरा । ६-१८।७
गयउ सहमि नहिं कछु कहि आवा । २-२८।५
गयउँ उजेनी सुनु उरगारी । ७-१०४।१
गयउँ तहाँ प्रभु भुज निरखि । ७-७९।ख
ग्यान अखंड एक सीताबर । ७-७७।४
ग्यान अगम प्रत्यूह अनेका । ७-४४।३
ग्यान गिरा गोतीत अज । ७-२५।०
ग्यान दया दम तीरथ मज्जन । ७-४८।२
ग्यान निधान अमान मानप्रद । ७-३३।५
ग्यान निधान सुजान सुचि । २-२९१।०
ग्यान पंथ कृपान कै धारा । ७-११८।१
ग्यान बिबेक बिरति बिग्याना । ७-८३।१
ग्यान बिरति बिग्यान निवासा । ७-९३।२
ग्यान बिराग जोग बिग्याना । ७-११४।१५
ग्यान बिराग सकल गुन अयना । १-२०५।८
ग्यान मान जहँ एकउ नाहीं । ३-१४।७
ग्यान सभाँ जनु तनु धरें । २-२३९।०
ग्यानवंत अपि सो नर । ७-७८।क
ग्यानवंत कोटिक महँ कोऊ । ७-५३।४
ग्यानहि भगतिहि अंतर केता । ७-११४।११
ग्यानी तापस सूर कबि । ७-७०।क
ग्यानी भगत सिरोमनि । ७-६२।क
गरइ गलानि कुटिल कैकेई । २-२७२।१
गरजहिं गज घंटा धुनि घोरा । १-३००।१
गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं । ३-१७।८
गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीसा । ६-३८।८
गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका । ५-५४।८
गर्जहिं भालु बलीमुख । ६-४७।०
गर्जहिं सिंघनाद कपि । ६-३९।०
गर्जि परे रिपु कटक मझारी । ६-४३।७
गर्जेउ अट्टहास करि । ६-७२।०
गर्जेउ मरत घोर रव भारी । ६-१०२।४
गर्जेउ मूढ़ महा अभिमानी । ६-९२।२
गर्भ न गयहु ब्यर्थ तुम्ह जायहु । ६-२०।६
गर्भ स्त्रवहिं अवनिप रवनि । १-२७९।०
गर्भन्ह के अर्भक दलन । १-२७२।०
गरल कंठ उर नर सिर माला । १-९१।४
गरल सुधा रिपु करहिं मिताई । ५-४।२
गरल सुधासम अरि हित होई । ७-११९।७
गरुड़ गिरा सुनि हरषेउ कागा । ७-९४।१
गरुड़ महाग्यानी गुन रासी । ७-५४।३
गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही । ५-४।३
गलीं सकल अरगजाँ सिंचाईं । १-३४३।५
गवनी बाल मराल गति । १-२६३।०
गवनु निठुरता निकट किय । २-२४।०
गवने तुरत तहाँ रिषिराई । १-१३२।४
गवने भरत पयादेहिं पाए । २-२०२।४
गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ठ । ५-३४।१६
गह सिसु बच्छ अनल अहि धाई । ३-४२।६

घ

च

चले सकल गृह काज बिसारी । १-२३९।६
चले सकल बन खोजत । ४-२३।०
चले सकल सेवक समुदाई । १-२९९।८
चले सखा कर सों कर जोरें । २-१९७।५
चले सप्रेम असीस सुनि । २-३१८।०
चले सबेग रामु तेहि काला । २-२४२।२
चले समीर बेग हय हाँके । २-१५७।१
चले ससीय मुदित दोउ भाई । २-१११।२
चले सहित सिय लखन जन । २-१०८।०
चले साथ अस मंत्रु दृढ़ाई । २-८३।७
चले संग हिमवंतु तब । १-१०२।०
चले हरषि तजि नगर नृप । ४-१६।०
चले हरषि बरषि प्रसून निज निज । १-३२६।२६
चले हरषि रघुनायक पासा । ५-२७।६
चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा । ५-१७।१
चलेउ निसाचर कटकु अपारा । ६-७८।१
चलेउ निसाचर क्रुद्ध होइ । ६-८५।०
चलेउ सुमंत्रु राय रुख जानी । २-३८।२
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं । ५-४१।४
चवँर चारु किंकिनि धुनि करहीं । १-२९८।४
चवँर जमुन अरु गंग तरंगा । २-१०४।८
चलै कि जल बिनु नाव । ७-८९।ख
चहत न भरत भूपतहि भोरें । २-३५।१
चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ । १-२१।८
चहू चतुर कहुँ नाम अधारा । १-२१।७
चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका । १-२६।१
चहुँ दिसि कंचन मंच बिसाला । १-२२३।३
चहुँ दिसि चपेटन्हि मारि नखन्हि । ६-९९।१५
चहुँ दिसि चितइ पूँछि मालीगन । १-२२७।१

चातक कोकिल कीर चकोरा । १-२२६।६
चातक रटत तृषा अति ओही । ४-१६।५
चातक हंस सराहिअत । २-३२४।०
चातकु रटनि घटें घटि जाई । २-२०४।४
चाप समीप रामु जब आए । १-२५९।३
चाप स्रुवा सर आहुति जानू । १-२८२।२
चापत चरन लखनु उर लाएँ । १-२२५।७
चामर चरम बसन बहु भाँती । २-५।३
चारा चाषु बाम दिसि लेई । १-३०२।२
चारि खानि जग जीव अपारा । १-३४।४
चारि पदारथ करतल ताकें । २-४५।२
चारि पदारथ भरा भँडारू । २-१०४।४
चारि भाँति भोजन बिधि गाई । १-३२८।४
चारि लच्छ बर धेनु मगाईं । १-३३०।२
चारि सिंघासन सहज सुहाए । १-३४९।१
चारिउ चरन धर्म जग माहीं । ७-२०।३
चारिउ भाइ सुभायँ सुहाए । १-३३४।१
चारिउ सील रूप गुन धामा । १-१९७।६
चारु चरन नख लेखति धरनी । २-५७।५
चारु चिबुक नासिका कपोला । १-२३२।५
चारु चित्रसाला गृह । ७-२७।०
चारु पुरट मनि रचित बनाई । ७-७५।८
चारु बजारु बिचित्र अँबारी । १-२१२।२
चारु बिचित्र पबित्र बिसेषी । २-३११।३
चालति न भुजबल्ली बिलोकनि । १-३२६।२०
चाहउँ तुम्हहि समान सुत । १-१४९।०
चाहहु सुनै राम गुन गूढ़ा । १-४६।४
चाहिअ करन सो सब करि बीते । ६-६।२
चाहिअ कीन्हि भरत पहुनाई । २-२१२।५

सौजन्य - श्री राधाकृष्ण गुप्ता, पी-२, डालिम तल्ला लेन, कलकत्ता-७०० ००६

छ

ज

सौजन्य - श्रीमती कमला देवी गुप्ता, पी-२, डालिम तल्ला लेन, कल-७०० ००६

जेहि सुभायँ चितवहिं हितु जानी । १-२६८।३
जेहिं अघ बधेउ ब्याध जिमि बाली । १-२८।६
जेहिं आश्रम तुम्ह बसब पुनि । ७-११३।ख
जेहिं उपाय पुनि पाय । २-३१३।०
जेहिं कृत कपट कनक मृग झूठा । ६-९८।७
जेहिं कौतुक सिवसैलु उठावा । १-२९१।८
जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता । ५-०।७
जेहिं जलनाथ बँधायउ हेला । ६-३६।१
जेहिं जेहिं जोनि करम बस भ्रमहीं । २-२३।५
जेहिं जेहिं देस धेनु द्विज पावहिं । १-१८२।६
जेहिं जेहिं बेष अजादि सुर । १-५४।०
जाहिं जोनि जन्मौं कर्म बस । ४-९।११
जेहिं ताड़का सुबाहु हति । ३-२५।०
जेहिं तेरहुति तेहि समय निहारी । १-२८८।७
जेहिं देखे तेहि समय बिदेहू । २-२७०।२
जेहिं देखौं अब नयन भरि । २-३२।०
जेहिं न रामु बन लहहिं कलेसू । २-७४।८
जेहिं पद सुरसरिता परम पुनीता । १-२१०।१३
जेहिं पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा । ५-५३।७
जेहिं बन जाइ रहब रघुराई । २-१०३।५
जेहिं बर बाजि रामु असवारा । १-३१६।१
जेहिं बलि बाँधि सहसभुज मारा । ६-५[illegible]
जेहिं बहु बार नचावा मोही । ७-५८।६
जेहिं बिधि तुम्हहि रूपु अस दीन्हा । १-९५।८
जेहिं बारीस बँधायउ हेला । ६-८।५
जेहिं बिधि मोहि दुख दुसह सहाए । ६-९८।८
जेहिं बिधि राम बिमुख मोहि कीन्हा । ६-५८।५
जेहिं बिरंचि रचि सीय सँवारी । १-२२२।७
जेहिं मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं । १-११।११
जेहिं मारे सोइ अवतरेउ । ६-४८।क
जेहिं मंडप दुलहिनि बैदेही । १-२८८।४
जेहिं यह कथा सुनी नहिं होई । १-३२।३
जेहिं रघुनंदन जानकिहि । २-९१।०
जेहिं राउर अति अनभल ताका । २-२०।५
जेहिं रिपु छय सोइ रचेन्हि उपाऊ । १-१६९।८
जेहिं रिस जाइ करिअ सोइ स्वामी । १-२८०।८
जेहिं समाज बैठे मुनि जाई । १-१३३।१
जेहिं सायक मारा मैं बाली । ४-१७।५
जेहिं सुनि बिनय मोहि जनु जानी । २-१८२।८
जेहिं सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई । १-१८५।९
जैसें जाइ मोह भ्रम भारी । १-५१।३
जैसें मिटै मोर भ्रम भारी । १-४६।१
जैहउँ अवध कवन मुहु लाई । ६-६०।११
जो अगम सुगम सुभाव निर्मल । ३-३१।१५
जो अति आतप ब्याकुल होई । ७-६८।३
जो अति सुभट सराहेहु रावन । ६-२२।९
जो अपराधु भगत कर करई । २-२१७।५
जो अवलोकत लोकपति । १-३३३।०
जो आनन्द सिंधु सुखरासी । १-१९६।५
जो आपन चाहै कल्यानाँ । ५-३७।५
जो इच्छा करिहहु मन माहीं । ७-११३।४
जो इन्ह कर मारा नहिं मरई । ७-१०८।१४
जो एतेहुँ दुख मोहि जिआवा । २-१६४।८
जो एहि बरइ अमर सोइ होई । १-१३०।३
जो अचवँत नृप मातहिं तेई । २-२३०।७
जो कछु आयसु ब्रह्माँ दीन्हा । १-१८७।२
जो कछु कहेहु सत्य सब सोई । ४-६।२३
जो कछु रुचि तुम्हरे मन माहीं । १-१५०।२

जोइ जोइ मन भावइ सोइ लेहीं । ६-११६।७
जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई । ५-३४।७
जोइ तनु धरउँ तजउँ पुनि । ७-१०९।ग
जोइ पूँछिहि तेहि ऊतरु देबा । २-१४५।५
जोग अगिनि करि प्रगट तब । ७-११७।क
जोग ग्यान बैराग्य निधि । १-१०७।०
जोग जग्य जप तप ब्रत कीन्हा । ३-७।७
जोग जुगुति तप मंत्र प्रभाऊ । १-१६७।४
जोग बियोग भोग भल मंदा । २-९१।५
जोग भोग महँ राखेउ गोई । १-१६।२
जोग लगन ग्रह बार तिथि । १-१९०।०
जोग सिद्धि फल समय जिमि । २-२९।०
जोगवहिं जिन्हहि प्रान की नाईं । २-९०।५
जोगवहिं प्रभु सिय लखनहिं कैसें । २-१४१।१
जोगि बृंद दुरलभ गति जोई । ३-३५।८
जोगि बृंद दुर्लभ गति । ६-१०४।०
जोगिन्ह परम तत्त्वमय भासा । १-२४१।४
जोगिनि गहें करबाल । ६-१००।३
जोगिनि भरि भरि खप्पर संचहिं । ६-८७।७
जोगी अकंटक भए पति गति । १-८६।९
जोगी जटिल अकाम मन । १-६७।०
जोगी सूर सुतापस ग्यानी । ७-१२३।६
जोगींद्र सिद्ध मुनीस देव । १-३२६।२५
जोगु कुजोगु ग्यानु अग्यानू । २-२९०।२
जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा । ५-१।७
जोबन ज्वर केहि नहिं बलकावा । ७-७०।२
जोरि पानि कह तब हनुमंता । ७-३५।५
जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रनामू । १-५२।७
जोरि पानि बर मागउँ एहू । २-११६।८
जोरि पानि बोले बचन । १-२८४।०
जोरि पानि सबहीं सिर नाए । ६-१०५।७
जोरि पंकरुह पानि सुहाए । १-३४०।३
जोसि सोसि तव चरन नमामी । १-१६०।५
जौ कृपाल पूँछिहु मोहि बाता । ५-३७।४
जौं अति प्रिय तौ करिअ उपाई । १-२७७।३
जौं अनाथ हित हम पर नेहू । १-१४५।३
जौं अनीति कछु भाषौं भाई । ७-४२।६
जौं अनीह ब्यापक बिभु कोऊ । १-१०८।१
जौं अपने अवगुन सब कहऊँ । १-११।५
जौं अब करउँ सती सन प्रीती । १-५५।८
जौ अस करौं तदपि न बड़ाई । ६-३०।१
जौं अस हिसिषा करहिं नर । १-६९।०
जौं असत्य कछु कहब बनाई । २-१८।५
जौं असि मति पितु खाए कीसा । ६-२३।९
जौं अहि सेज सयन हरि करहीं । १-६८।५
जौं आवइ मर्कट कटकाई । ५-३६।३
जौं ए कंद मूल फल खाहीं । २-११९।१
जौं ए मुनि पट धर जटिल । २-११९।०
जौं एहिं खल नित करब अहारू । १-१७६।७
जौं अंतहुँ अस करतबु रहेऊ । २-३४।४
जौं कछु कहौं कपटु करि तोही । २-२५।६
जौं कदाचि मोहि मारहिं । ४-७।०
जौं करनी समुझै प्रभु मोरी । ७-०।५
जौं करि कष्ट जाइ पुनि कोई । १-३८।१
जौं केवल पितु आयसु ताता । २-५५।१
जौं खल भएसि राम कर द्रोही । ६-२६।२
जौं धरु बरु कुलु होइ अनूपा । १-७०।३
जौं छबि सुधा पयोनिधि होई । १-२४६।७

जौं बरसइ बर बारी बिचारू। १-१०।१
जौं बहोरि कोउ पूछन आवा। १-३८।४
जौं बालक कह तोतरि बाता। १-७।१
जौं बिदेहु कछु करै सहाई। १-२६५।५
जौं बिधि जनमु देइ करि छोहू। २-१४।७
जौं बिधि पुरब मनोरथु काली। २-२२।३
जौं बिधि बस अस बनै सँजोगू। १-२२१।७
जौं बिनु अवसर अथवँ दिनेसू। २-३०४।७
जौं बिनु बोलें जाहु भवानी। १-६१।४
जौं बिप्रन्ह बस करहु नरेसा। १-१६४।४
जौं बिबाहु संकर सन होई। १-६८।४
जौं मन बच क्रम मम उर माहीं। ६-१०८।७
जौं मम चरन सकसि सठ टारी। ६-३३।१
जौं महेसु मोहि आयसु देहीं। १-६०।६
जौं मागा पाइअ बिधि पाहीं। २-१२०।५
जौं मृगपति बध मेड्डकन्हि। ६-२३।ग
जौं मैं राम त कुल सहित। ३-३१।०
जौं मैं सिव सेये अस जानी। १-८१।४
जौं मो पर प्रसन्न सुखरासी। १-१०७।१
जौं मोरें मन बच अरु काया। ६-५८।६
जौं मोरें सिव चरन सनेहू। १-५८।८
जौं यह बचन सत्य श्रुति भाषा। १-१४३।८
जौं यह साँची है सदा। १-२१।०
जौं रघुबीर अनुग्रह कीन्हा। ५-६।५
जौं रघुबीर होति सुधि पाई। ५-१५।१
जौं रन हमहिं पचारै कोऊ। १-२८३।२
जौं राउर आयसु मैं पावौं। १-२१७।६
जौं लरिका कछु अचगरि करहीं। १-२७६।३
जौं सखि इन्हहि देख नरनाहू। १-२२१।२

जौं सत संकर करहिं सहाई। ६-७४।१४
जौं सपनें सिर काटै कोई। १-११७।२
जौं सब कें रह ग्यान एकरस। ७-७७।५
जौं सभीत आवा सरनाईं। ५-४३।८
जौं सहाय कर संकरु आई। २-२२१।८
जौं सिय भवन रहै कह अंबा। २-५१।७
जौं सुत कहौं संग मोहि लेहू। २-५५।६
जौं सुत सहित करहु सेवकाई। २-१८।८
जौं हठ करउँ त निपट कुकरमू। २-२५२।६
जौं हठ करहु प्रेम बस बामा। २-६१।३
जौं हम निदरहिं बिप्र बदि। १-२८३।०
जंबुक निकर कटक्कट कट्टहिं। ६-८७।१

झ

झपटहिं करि बल बिपुल उपाई। ६-३३।१२
झपटहिं चरन गहि पटकि महि। ६-४०।१०
झपटहिं टरैं न कपि चरन। ६-३४।क
झरना झरहिं मत्त गज गाजहि। २-२३५।५
झरना झरहिं सुधासम बारी। २-२४८।६
झलका झलकत पायन्ह कैसें। २-२०३।१
झाँझि बिरव डिंडिमीं सुहाई। १-३४३।२
झाँझि मृदंग संख सहनाई। १-२६२।१
झूठइ लेना झूठइ देना। ७-३८।७
झूठि न होइ देवरिषि बानी। १-६७।७
झूठेउ सत्य जाहि बिनु जानें। १-११११।१
झूठेहुँ हमहि दोषु जनि देहू। २-२७।३

ट

टूट चाप नहिं जुरिहि रिसाने। १-२७७।२
टूटतहीं धनु भयउ बिबाहू। १-२८५।८
टेढ़ जानि सब बंदइ काहू। १-२८०।६

ठ

ड

ढ

त

तब मारिहउँ कि छाड़िहउँ । १-१८१।०
तब मारीच हृदयँ अनुमाना । ३-२५।३
तब मारुतसुत मुठिका हन्यो । ६-६४।७
तब मुनि अति सभीत हरि चरना । १-१३७।२
तब मुनि कहेउ सुमंत्र सन । ७-१०।क
तब मुनि बोले भरत सन । २-२५९।०
तब मुनि सन कह कृपानिधाना । ३-५।२
तब मुनि सादर कहा बुझाई । १-२०९।९
तब मुनि हृदयँ धीर धरि । ३-१०।०
तब मुनिबर मन कीन्ह बिचारा । १-२०५।६
तब मुनीस रघुपति गुन गाथा । ७-११०।१
तब मैं कहा कृपानिधि । ७-११०।घ
तब मैं निर्गुन मत कर दूरी । ७-११०।१३
तब मैं भागि चलेउँ उरगारी । ७-७८।७
तब मैं हृदयँ बिचारा । ७-४८।०
तब मोहि कहँ जसि देब रजाई । २-१०३।६
तब रघुनाथ कौसिकहिं कहेऊ । २-२७७।५
तब रघुनाथ निकट चलि आए । ३-९।१६
तब रघुपति अनुसासन पाई । ६-१०९।१
तब रघुपति उठाइ उर लावा । ४-२।६
तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा । ५-३३।६
तब रघुपति जानत सब कारन । ३-२६।६
तब रघुपति बोले मुसुकाई । ४-२०।७
तब रघुपति रावन के । ६-९७।०
तब रघुपति सब सखा बोलाए । ७-१५।२
तब रघुपति सबही सिरु नाई । २-१६५।४
तब रघुपति सुग्रीव पठावा । ४-६।२६
तब रघुबर मुनि सुजसु सुहावा । २-१०७।२
तब रघुबीर अनेक बिधि । २-१११।०

तब रघुबीर कहा मुनि पाहीं । ३-१२।१
तब रघुबीर पचारे । ६-९५।०
तब रघुबीर बोलि कपि लीन्हे । ६-१०५।८
तब रघुबीर श्रमित सिय जानी । २-१२३।३
तब रामहिं बिलोकि बैदेही । १-२५६।४
तब रावन दस सूल चलावा । ६-९१।५
तब रावन निज रूप देखावा । ३-२७।१३
तब रावन मयसुता उठाई । ६-७।१
तब रावनहि हृदय महुँ । ६-९९।०
तब रिषि निज नाथहि जियँ चीन्ही । १-२०८।७
तब लगि कुसल न जीव कहुँ । ५-४६।०
तब लगि न तुलसीदास नाथ । २-९९।१२
तब लगि बसति जीव मन माहीं । ५-४६।४
तब लगि बैठ अहउँ बटछाहीं । १-५१।२
तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई । ५-०।२
तब लगि रहहु दीन हित लागी । ३-७।६
तब लगि लै आयउ हनुमाना । ६-५४।६
तब लगि सुखु सपनेहुँ नहीं । २-१०७।०
तब लगि हृदयँ बसत खल नाना । ५-४६।१
तब लछिमन सीतहि लै आए । ३-२०।२
तब लंकेस क्रोध उर छावा । ६-८९।२
तब सक्रोध निसिचर खिसिआना । ३-२८।२१
तब सखीं मंगल गान करत । १-३२५।२३
तब सत बान सारथी मारेसि । ६-९०।७
तब सब लोग नहाइ नहाई । २-२७८।६
तब सिय देखि भूप अभिलाषे । १-२६५।१
तब सिवँ तीसर नयन उघारा । १-८६।६
तब सीताँ पूजी सुरसरी । ६-१२०।८
तब सुग्रीव चरन गहि नाना । ७-१८।७

तोरैं छत्रक दंड जिमि । १-२५३।०
तोष मरुत तब छमाँ जुड़ावै । ७-११६।१४
तोहि जिअत दसकंधर । ३-२१।०
तोहि देखि सीतलि भइ छाती । ५-२६।८
तोहि निज भगत राम कर जानी । ७-११२।१२
तोहि पटकि महि सेन हति । ६-३०।०
तोहि प्रानप्रिय राम । ३-५।ख
तोहि सम हित न मोर संसारा । २-२२।२
तौ अस को जग सुभटु जेहि । १-२८३।०
तौ कपि होउ बिगत श्रम सूला । ६-५८।७
तौ कृसांनु सब कै गति जाना । ६-१०८।८
तौ कौतुकिअन्ह आलसु नाहीं । १-८०।४
तौ जानकिहि मिलिहि बरु एहू । १-२२१।६
तौ तुम्ह बिनय करेहु कर जोरी । २-८१।२
तौ परिनाम न मोरि भलाई । २-१८५।४
तौ प्रभु बिषम बियोग दुख । २-६७।०
तौ प्रभु हरहु मोर अग्याना । १-१०७।२
तौ फुर होउ जो कहेउँ सब । १-१५।०
तौ बसीठ पठवत केहि काजा । ६-२७।७
तौ भगवानु सकल उर बासी । १-२५८।५
तौ भल जतनु करब सुबिचारी । २-२८३।३
तौ मैं जाइ बैरु हठि करऊँ । ३-२२।४
तौ मैं जाउँ कृपायतन । १-६१।०
तौ मैं बिनय करउँ कर जोरी । १-५८।७
तौ सबदरसी सुनिअ प्रभु । १-५९।०
तौ सिवधनु मृनाल की नाईं । १-२५४।८
तौ हमार पन सुनहु मुनीसा । १-८९।५

थ

थकित बचन लोचन सजल । २-१५२।०
थके नयन रघुपति छबि देखें । १-२३१।५
थके नारि नर प्रेम पिआसे । २-११५।३
थर थर काँपहिं पुर नर नारी । १-२७७।५
थाती राखि न मागिहु काऊ । २-२७।२
थोरिहिं बात पितहि दुख भारी । २-४१।६
थोरेहि महँ सब कहउँ बुझाई । ३-१४।१

द

दच्छ जग्य तव भा अपमाना । ७-५५।३
दच्छ न कछु पूछी कुसलाता । १-६२।३
दच्छ लिए मुनि बोलि सब । १-६०।०
दच्छ सकल निज सुता बोलाईं । १-६१।२
दच्छ सकल लच्छन जुत सोई । ७-४८।८
दच्छसुतन्ह उपदेसेन्हि जाई । १-७८।१
दच्छिन दिसि अवलोकि प्रभु । ६-१२।ख
दधि चिउरा उपहार अपारा । १-३०४।६
दधि दुर्बा रोचन फल फूला । ७-२।५
दधिमुख केहरि निसठ सठ । ५-५४।०
दनुजवनकृशानुं............ । ५-श्लोक३।२
दम दान दया नहिं जानपनी । ७-१०१।९
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयऊ । १-२६०।६
द्रवहिं बचन सुनि कुलिस पषाना । २-२१९।७
दरस परस मज्जन अरु पाना । १-३४।१
दरस लागि प्रभु राखेउँ प्राना । ३-३०।४
दरस लालसा सकुच न थोरी । १-३२४।५
दरसन तृपित न आजु लगि । २-२६०।०
दरसनु देब जानि निज दासी । २-११७।३
दल फल मूल कंद बिधि नाना । २-२७८।८
दलकि उठेउ सुनि हृदउ कठोरू । २-२६।४
दलन मोह तम सो सप्रकासू । १-०।६

न

पनु करि रघुपति भगति देखाई । १-१०३।८
पन्नगारि असि नीति । ७-९५।क
पनव निसान घोर रव बाजहिं । ६-७८।८
पनिघट परम मनोहर नाना । ७-२८।२
पय अहार फल असन एक । २-१८८।०
पय पयोधि तजि अवध बिहाई । २-१३८।५
परउँ कूप तुअ बचन पर । २-२९।०
पर अकाजु लगि तनु परिहरहीं । १-३।७
पर उपकार बचन मन काया । ७-१२०।१४
पर उपकारी पुरुष जिमि । ३-४०।०
पर उपदेस कुसल बहुतेरे । ६-७७।२
पर घर घालक लाज न भीरा । १-९६।४
परद्रोह रत अति दुष्ट । ६-११२।९
परद्रोही की होहिं निसंका । ७-१११।२
पर द्रोही पर दार रत । ७-३९।०
परबस जीव स्वबस भगवंता । ७-७७।७
परबस सखिन्ह लखी जब सीता । १-२३३।५
पर सुख देखि जरनि सोइ छई । ७-१२०।३४
पर संपदा बिनासि नसाहीं । ७-१२०।१९
पर संपदा सकहु नहिं देखी । १-१३५।७
परहित बस जिन्ह के मन माहीं । ३-३०।९
पर हित लागि तजइ जो देही । १-८३।२
पर हित सरिस धर्म नहिं भाई । ७-४०।१
पर हित हानि लाभ जिन्ह केरें । १-३।२
पर त्रिय लंपट कपट सयाने । ७-९९।१
परत पाँवड़े बसन अनूपा । १-३२७।२
परदखिना करि करहिं प्रनामा । २-२०९।३
परनकुटि प्रिय प्रियतम संगा । २-१३९।५
परम क्रोध मीजहिं सब हाथा । ५-५४।५

परम चतुरता श्रवन सुनि । ६-३८।ख
परम तुम्हार राम कर जानिहि । २-१७४।७
परम दुखी भा पवनसुत । ५-८।०
परम धर्ममय पय दुहि भाई । ७-११६।१३
परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा । ७-१२०।२२
परम प्रकास रूप दिन राती । ७-११९।३
परम प्रबल रिपु सीस पर । ६-९०।०
परम प्रसन्न जानु मुनि मोही । ३-१०।२३
परम प्रीति कर जोरि जुग । ६-११४।ख
परम प्रीति समीप बैठारे । ७-९५।३
परम पुनीत न जाइ तजि । १-५६।०
परम पुनीत भरत आचरनू । २-३२५।५
परम प्रेम तिन्ह कर प्रभु देखा । ७-९६।३
परम पेम पूरन दोउ भाई । २-२४०।२
परम प्रेम मन पुलक सरीरा । १-११२।४
परम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही । १-२३४।३
परम मनोहर चरित अपारा । १-२०२।४
परम मित्र तापस नृप केरा । १-१६९।४
परम रम्य आरामु यहु । १-२२७।०
परम रम्य उत्तम यह धरनी । ६-१।३
परम रम्य गिरिबरु कैलासू । १-१०४।८
परम बिनीत सकुचि मुसुकाई । १-२१७।४
परम सती असुराधिप नारी । १-१२२।७
परम स्वतंत्र न सिर पर कोई । १-१३६।१
परम साधु परमारथ बिंदक । ७-१०४।४
परम सुखद चलि त्रिबिध बयारी । ६-११८।७
परम हानि सब कहँ बड़ लाहू । २-१८०।७
परमातमा ब्रह्म नर रूपा । ७-४७।८
परमातुर बिहंगपति । ७-६०।०

फ

ब

बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे । १-२५४।७
बंदि बिप्र गुर चरन प्रभु । २-७९।०
बंदि बिप्र सुर गुर पितु माता । १-३५७।७
बंदि बंदि पग सिय सबही के । २-२४५।३
बंदि मागधन्हि गुनगन गाए । १-३५७।६
बंदि राम पद बारहिं बारा । ५-५६।१२
बंदि राम सिय चरन सुहाए । २-७५।२
बंदी बेद पुरान गन कहहिं । २-१०५।०
बंदी बेष बेद तब । ७-१२।ख
बंदी मागध सूतगन । १-२६२।०
बंध मोच्छ प्रद सर्बपर । ३-१५।०
बंधन काटि गयो उरगादा । ७-५७।५
बंधु कहइ कटु संमत तोरें । १-२८०।१
बंधु सदा बिलोकि दुख कीन्हा । ६-१०४।५
बंधु प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती । २-३१५।२
बंधु बचन सुनि चला बिभीषन । ६-६४।१
बंधु बचन सुनि प्रभु मुसुकाने । १-२३८।७
बंधु बंस तैं कीन्ह उजागर । ६-६३।९
बंधु मनोहर सोहहि संगा । १-३१५।५
बंधु सखा सँग लेहिं बोलाई । १-२०४।१
बंधु सनेह सरस एहि ओरा । २-२३९।४
बंधु समेत जनकु तब आए । १-३३७।४
बंस कि रह द्विज अनहित कीन्हें । ७-१११।३

भ

भइ दिनकर कुल बिटप कुठारी । २-९१।१
भइ बड़ि भीर भूप दरबारा । २-७५।६
भइ मम कीट भृंग की नाई । ३-२४।७
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती । १-११८।८
भईं बिकल अबला सकल । १-९६।०
भईं मुदित सब ग्रामबधूटीं । २-११६।८
भए अजस अघ भाजन प्राना । २-१४३।५
भए कामबस जोगीस तापस । १-८४।९
भए कालबस जब पितु माता । ७-१०९।९
भए क्रुद्ध जुद्ध बिरुद्ध रघुपति । ६-९०।९
भए क्रुद्ध तीनिउ भाइ । ३-१९।४
भए कुमार जबहिं सब भ्राता । १-२०३।३
भए जे अहहिं जे होइहहिं आगें । १-१३।६
भए तुरत सब जीव सुखारे । १-८५।३
भए निसाचर जाइ । १-१२२।०
भए प्रगट कृपाला दीन । १-१९१।१
भए परसपर प्रेमबस फिरि । १-३४२।०
भए प्रेमबस सचिव सुनि । १-३३२।०
भए बरन संकर कलि । ७-१००।क
भए बहुत दिन अति अवसेरी । २-६।६
भए बिकल खग मृग एहि भाँती । १-३३७।३
भए बिकल बानर भालु । ६-१००।८
भए बिगतश्रम रामु सुखारे । २-१०६।४
भए बिलोचन चारु अचंचल । १-२२९।४
भए बिसुद्ध दिए सब दाना । २-१६९।८
भए बिसोक कोक मुनि देवा । १-२५४।३
भए मगन छबि तासु बिलोकि । १-४९।८
भए मगन देखत मुख सोभा । १-२०६।६
भए मगन मन तन बचन । २-३१७।०
भए मगन सब देखनिहारे । १-३२४।६
भए मगन सिव सुनत सनेहा । १-८१।३
भए लोग सब मोहबस । ७-९७।ख
भए सब सुखी देखि दोउ भ्राता । १-२१४।७
भएँ ग्यानु बरु मिटै न मोहू । २-१६८।३

भक्त कल्पपादप आरामः । ३-१०।१३
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव । ५-श्लोक-२।३
भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी । ७-४४।५
भगत बछल प्रभु कृपानिधाना । १-१४५।८
भगत बछलता प्रभु कै देखी । ७-८२।७
भगत कल्पतरु प्रनत हित । ७-८४।ख
भगत भूमि भूसुर सुरभि । २-९३।०
भगत सिरोमनि भरत तें । २-२१९।०
भगत हेतु नाना बिधि । १-२०५।०
भगत हेतु भगवान प्रभु । ७-७२।क
भगतिहि ग्यानिहि नहिं कछु भेदा । ७-११४।१३
भगतिहि सानुकूल रघुराया । ७-११५।५
भगति करत बिनु जतन प्रयासा । ७-११८।८
भगति कि साधन कहउँ बखानी । ३-१५।५
भगति ग्यान बिग्यान बिरागा । ७-८४।७
भगति ग्यान बिग्यान बिरागा । १-११०।२
भगति ग्यानु बैराग्य जनु । २-३२१।०
भगति जोग सुनि अति सुख पावा । ३-१६।१
भगति तात अनुपम सुखमूला । ३-१५।४
भगति निरूपन बिबिध बिधाना । १-३६।१३
भगति पच्छ हठ करि रहेउँ । ७-११४।ख
भगति पच्छ हठ नहिं सठताई । ७-४५।८
भगतिवंत अति नीचउ प्रानी । ७-८५।१०
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें । १-१८८।६
भगति सुतिय कल करन बिभूषन । १-११।६
भगति हीन गुन सब सुख ऐसे । ७-८३।५
भगति हीन नर सोहइ कैसा । ३-३४।६
भगति हीन बिरंचि किन होई । ७-८५।९
भगति हेतु बहु कथा पुराना । १-२०१।८
भगति हेतु बिधि भवन बिहाई । १-१०।४
भगति हेतु सोइ दीनदयाला । १-२२४।५
भजन हीन सुख कवने काजा । ७-८३।६
भजसि न मन तेहि राम । ६-०।१
भजहि राम तजि काम मद । ३-४६।ख
भजहु प्रनत प्रतिपालक रामहि । ७-२१।२
भजहु राम पद पंकज । ७-११९।क
भजहु राम रघुनायक । ५-२३।०
भजहु राम रघुबीर । ७-९०।ख
भजामि ते पदांबुजं । ३-३।२
भजामि भाव वल्लभं । ३-३।११
भजि रघुपति करु हित आपना । ६-५५।५
भजिअ राम तजि काम सब । ७-१०४।क
भजे सशक्ति सानुजं । ३-३।१२
भट कटत तन सत खंड । ३-१९।११
भट कपाल करताल बजावहिं । ६-८७।८
भट गिरत रथ ते बाजि गज । ६-७७।११
भट जम नियम सैल रजधानी । २-२३४।७
भनिति बिचित्र सुकबि कृत जोऊ । १-९।३
भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी । १-९।१०
भनिति मोरि सब गुन रहित । १-९।०
भनिति मोरि सिव कृपाँ बिभाती । १-१४।९
भय अरु प्रीति नीति देखराई । ४-१८।७
भय आतुर कपि भागन लागे । ६-४२।१
भय उचाट बस मन थिर नाहीं । २-३०१।५
भयदायक खल कै प्रिय बानी । ३-२३।८
भय देखाइ लै आवहु । ४-१८।०
भयउ ईस मन छोभु बिसेषी । १-८६।४
भयउ कालबस काहु न माना । ६-८५।२

सौजन्य- श्रीमती कमला देवी मंत्री चैरिटी ट्रस्ट, १५/ए, हेमंत बसु सरणी, कल-१

सौजन्य - श्रीमती कमला देवी मंत्री चैरिटी ट्रस्ट, १५/ए, हेमंत बसु सरणी, कल - १

भव बारन दारन सिंह प्रभो । ६-११०।२
भव बारिधि कुंभज रघुनायक । ७-३४।३
भव बारिधि मंदर परमं दर । ६-११४।६
भव बारिधि मंदर सब बिधि । १-१८५।१५
भव बंधन ते छूटहिं नर । ७-५८।०
भव भव बिभव पराभव कारिनि । १-२३४।८
भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं । ४-३०।क
भव भंजन गंजन संदेहा । ७-१२९।२
भव भंजन रघुनाथ भजु । १-१२४।ख
भव भंजन रंजन सुर यूथः । ३-१०।१०
भव मगु अगम अनंदु तेइ । २-१२३।०
भव श्रम सोषक तोषक तोषा । १-४२।४
भव सागर चह पार जो पावा । ७-५२।३
भव सिंधु अगाध परे नर ते । ७-१३।१०
भवन एक पुनि दीख सुहावा । ५-४।८
भवन गईं रघुपति गुन । ६-१०५।०
भवन गयउ दसकंधर । ५-१०।०
भवन बेदधुनि अति मृदु बानी । १-१९४।७
भवन भरतु रिपुसूदनु नाहीं । २-७०।२
भवानीशङ्करौ वन्दे । १-श्लोक-२
भवनु भयंकरु लाग तेहि । २-१४७।०
भा अति क्रुद्ध महाबल बीरा । ६-६८।२
भा निरास उपजी मन त्रासा । ३-१।३
भा सब कें मन मोदु न थोरा । २-१८४।१
भाइ सचिव गुर पुरजन साथा । २-२७४।१
भाइन्ह सहित उबटि अन्हवाए । १-३३५।३
भाइन्ह सहित बिआहि । १-३५०।०
भाइन्ह सहित रामु मिलि राजहि । २-२७४।८
भाइहि भाइहि परम समीती । १-१५२।७

भाइहि सौंपि मातु सेवकाई । २-११७।४
भाइहु लावहु धोख जनि । २-१९१।०
भाग छोट अभिलाषु बड़ । १-८।०
भाग हमारें आगमनु । २-१३५।०
भाग्य बिभव अवधेस कर । १-३१३।०
भागत भट पटकहिं धरि धरनी । ६-४६।७
भागि भवन पैठीं अति त्रासा । १-९५।५
भागे बानर धरहिं न धीरा । ६-९५।४
भागे भालु बलीमुख जूथा । ६-६९।१
भागेउ बिबेकु सहाय सहित । १-८३।९
भाजि चले किलकत मुख । १-२०३।०
भाँति अनेक परे पकवाने । १-३२८।२
भाँति अनेक भई जेवनारा । १-९८।४
भाँति अनेक भरतु समुझाए । २-१६६।२
भाँति अनेक संभु समुझावा । १-६१।७
भाँति भाँति बोलहि बिहग । २-१३७।०
भानु कमल कुल पोषनिहारा । २-१६।७
भानु कृसानु सर्ब रस खाहीं । १-६८।६
भानुप्रतापहि बाजि समेता । १-१७०।७
भानु पीठि सेइअ उर आगी । ४-२२।४
भानुबंस भए भूप घनेरे । १-२५४।५
भानु बंस राकेस कलंकू । १-२७३।२
भामिनि करहु न कहौं उपाऊ । २-२०।८
भामिनि भयउ तोर मनभावा । २-२६।२
भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ । १-२७।१
भायप भगति भरत आचरनू । २-२२२।१
भायप भलि चहूँ बंधु की । १-४२।०
भार धरन सत कोटि अहीसा । ७-९१।८
भाल तिलक श्रमबिंदु सुहाए । १-२३२।३

भूप भगीरथ सुरसरि आनी । २-२०८।७
भूप भरत पुनि लिए बोलाई । १-२९७।१
भूप भरतु मुनि सहित समाजू । २-२९३।४
भूप भवन किमि जाइ बखाना । १-२९६।४
भूप भवनु तेहि अवसर सोहा । १-३४४।१
भूप मनोरथ सुभग बनु । २-२८।०
भूप मौलि मनि मंडन धरनी । ७-३४।६
भूप रूप गुन सील सराही । २-२७५।८
भूप रूप तब राम दुरावा । ३-९।१८
भूप सजेउ अभिषेक समाजू । २-९।२
भूप सयानप सकल सिरानी । १-२५५।५
भूप सहस दस एकहि बारा । १-२५०।१
भूप सुमंत्रु लीन्ह उर लाई । २-१४८।१
भूपति गवने भवन तब । १-२९४।०
भूपति जिअब मरब उर आनी । २-२८१।७
भूपति तृषित बिलोकि तेहिं । १-१५८।०
भूपति बोलि बराती लीन्हे । १-३५०।४
भूपति भवन कोलाहलु होई । १-३४४।७
भूपति भवन सुभायँ सुहावा । २-८९।७
भूपति भावी मिटइ नहिं । १-१७४।०
भूपति मरन पेम पनु राखी । २-२६१।१
भूपति राम सपथ जब करई । २-२१।७
भूपहि बचन बानसम लागे । २-७८।६
भूमि जीव संकुल रहे । ४-१७।०
भूमि न छाँड़त कपि चरन । ६-३४।ख
भूमि परत भा ढाबर पानी । ४-१३।६
भूमि परा कर गहत अकासा । ५-५६।२
भूमि सप्त सागर मेखला । ७-२१।१
भूमि सयन पटु मोट पुराना । २-२४।६
भूमि सयन बलकल बसन । २-६२।०
भूर्ज तरू सम संत कृपाला । ७-१२०।१६
भूरि भाग भाजनु भयहु । २-७४।०
भूरि भायँ भेंटे भरत । २-२४१।०
भूषन कराल कपाल कर । १-९२।१०
भूषन बनमाला नयन०। १-११९।४
भूषन बसन बाजि गज दीन्हे । १-३३९।२
भूषन बसन भोग सुख भूरी । २-३२३।५
भूषन बसन महामनि नाना । १-३०४।४
भूषन मनि पट नाना जाती । १-३४८।२
भूषन सकल सुदेस सुहाए । १-२४७।३
भूषन सजति बिलोकि मृगु । २-२६।०
भूषित उड़गन तड़ित घनु । १-३१६।०
भूसुर बोलि भरत कर जोरे । २-३२२।३
भूसुर भीर देखि सब रानी । १-३५१।२
भूसुर सचिव समेत समाजा । १-३३८।४
भूसुर ससि नव बृंद बलाहक । ७-५०।४
भृकुटि बिलास जासु जग होई । १-१४७।४
भृकुटि बिलास नचावइ ताही । १-१९९।५
भृकुटि बिलास भयंकर काला । ६-१४।२
भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई । ३-२७।४
भृकुटि भंग जो कालहि खाई । ६-६५।२
भृकुटि मनोज चाप छबि हारी । १-१४६।४
भृकुटी कुटिल नयन रिस राते । १-२६७।७
भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता । १-२६९।८
भृगुपति केरि गरब गरूआई । १-२५९।५
भृगुपति बकहिं कुठार उठाएँ । १-२८०।४
भृगुपति सुनि सुनि निरभय बानी । १-२७७।६
भृगुबर परसु देखावहु मोही । १-२७५।६

म

य

सौजन्य - श्रीमती विमला देवी बंग, ११/१, वाटकिंग्स लेन, हावड़ा

राम रूप गुन सील सुभाऊ। २-१४८।६
राम रूपु गुन सीलु सुभाऊ। २-०।८
राम रूप गुन सुमिरत। ६-६३।०
रामरूप राकेसु निहारी। १-२६१।३
राम रूपु नख सिख सुभग। १-३१५।०
राम रूपु भूपति भगति। १-३६०।०
राम रोष पावक अति घोरा। ३-२८।१७
राम लखन कै कीरति करनी। १-२९४।६
राम लखन तुम्ह सत्रुहन। २-१७३।०
राम लखन पथि कथा सुहाई। २-१२१।८
राम लखन सिय जान चढ़ि। २-८५।०
राम लखन सिय पद सिरु नाई। २-९८।८
राम लखन सिय प्रीति सुहाई। २-१२२।७
राम लखन सिय बिनु पग पनहीं। २-२१०।८
राम लखन सिय रूप निहारी। २-८८।१
राम लखन सिय रूप निहारी। २-११३।३
राम लखन सिय रूपु निहारी। २-११०।८
राम लखन सिय सुंदरताई। २-११५।२
राम सकल नामन्ह ते अधिका। ३-४१।८
राम सकल बनचर तब तोषे। २-१३६।२
राम सकुल रन रावनु मारा। १-२४।५
रामसखहि मिलि भरत सप्रेमा। २-१९४।३
रामसखा कर दीन्हें लागू। २-२१५।४
रामसखाँ तेहि समय देखावा। २-२२४।५
रामसखा रिषि बरबस भेंटा। २-२४२।६
राम सखा सुनि संदनु त्यागा। २-१९२।७
राम सखाँ तब नाव मगाई। २-१५०।३
राम सच्चिदानंद दिनेसा। १-११५।५
राम सत्यब्रत धरम रत। २-२९२।०
राम सत्य सबु जो कछु कहहू। २-४२।४
राम सदा सेवक रुचि राखी। २-२१८।७
राम सनेह मगन सब जाने। २-१३४।७
राम सनेह सरस मन जासू। २-२७६।४
राम सपथ मैं कीन्हि न काऊ। २-२८२।२
राम सपथ सत कहउँ सुभाऊ। २-३१।१
राम सपथ सुनि मुनि जनकु। २-२९६।०
राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं। २-१०८।१
राम सप्रेम पुलकि उर लावा। २-११०।१
राम सरिस को दीन हितकारी। ६-११३।९
राम सरिस बरु दुलहिनि सीता। १-३०३।२
राम सरिस सुत कानन जोगू। २-४९।७
राम सरूप तुम्हार। २-१२६।०
राम सिंधु घन सज्जन धीरा। ७-११९।१७
राम सीय जस सलिल सुधासम। १-३६।३
राम सीय तन सगुन जनाए। २-६।४
राम सीय सिर सेंदुर देहीं। १-३२४।८
राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं। १-३२४।३
राम सुकीरति भनिति भदेसा। १-१३।१०
राम सुकंठ बिभीषन दोऊ। १-२४।१
राम सुनहु मुनि कह कर जोरी। ७-४७।३
राम सुना दुखु कान न काऊ। २-२००।१
राम सुप्रेमहि पोषत पानी। १-४२।३
राम सुभाउ सुमिरि बैदेही। ६-९९।२
राम सुमंत्रहि आवत देखा। २-३८।६
राम सुस्वामि कुसेवकु मोसो। १-२७।४
राम सेन निज पाछें घाली। ६-६९।६
राम सैल बन देखन जाहीं। २-२४८।५
राम सैल सोभा निरखि। २-२३६।०

ल

व

वन्देऽहं तमशेषकारणपरं । १-श्लोक।६
वर्णानामर्थसंघानां रसानां । १-श्लोक।१
वह सुख संपति समय समाजा । १-११४।२
वह सोभा समाज सुख । ७-१२।क
विनिश्चितं वदामि ते । ७-१२२।ग
विविक्त वासिनः सदा । ३-३।१५
विशुद्ध बोध विग्रहं । ३-३।१०
वैराग्याम्बुज भास्करं ह्यघ । ३श्लोक।१(२)
व्रजंति नात्र संशयं । ३-३।२४

श

शङ्खेन्द्वाभमतीवसुन्दरतनुं...... । ६श्लोक२(२)
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः । २श्लोक।१(४)
शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं । ५श्लोक।१(१)
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ । ४श्लोक।१(२)
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिज । ७श्लोक।१(१)
श्याम तामरस दाम शरीरं । ३-१०।३
श्रद्धा छमा मयत्री दाया । ३-४५।४
श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई । ७-८९।४
श्रद्धा भगति समेत प्रभु । २-२४७।०
श्रम कन सहित स्याम तनु देखें । २-६६।४
श्रम बिंदु मुख राजीव लोचन । ६-७०।१४
श्रमित भूप निद्रा अति आई । १-१६९।२
श्रवन दिसा दस बेद बखानी । ६-१४।४
श्रवन नासिका काटैं लागे । ५-५३।४
श्रवन पुटन्हि मन पान करि । ७-५२।ख
श्रवन समीप भए सित केसा । २-१।७
श्रवन सुजसु सुनि आयउँ । ५-४५।०
श्रवन सुधा सम बचन । १-१४५।०
श्रवन सुनी सठ ता करि बानी । ५-३६।१

श्रवनवंत अस को जग माहीं । ७-५२।५
श्रवनादिक नव भक्ति दृढ़ाहीं । ३-१५।८
श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई । ५-१२।७
श्राप अनुग्रह करहु कृपाला । १-१३८।४
श्राप सीस धरि हरषि हियँ । १-१३७।०
श्रीखंड सम पावक प्रबेस कियो । ६-१०८।९
श्रीगुरु चरन सरोज रज । २-०।१
श्रीगुर पद नख मनि गन जोती । १-०।५
श्रीनिवासपुर तें अधिक । १-१२९।०
श्रीपति निज माया ,तब प्रेरी । १-१२८।८
श्रीफल कनक कदलि हरषाहीं । ३-२९।१३
श्रीमुख तुम्ह पुनि कीन्हि बड़ाई । ७-३६।३
श्रीमुख बचन सुनत सब भाई । ७-४१।१
श्रीमच्छाम्भुमुखेन्दु सुन्दरवरे । ४-श्लोक-२।२
श्री मद बक्र न कीन्ह केहि । ७-७०।ख
श्रीरघुनाथ रूप उर आवा । १-११०।८
श्रीरघुनाथ नाम तजि । ६-१२१।ख
श्रीरघुबीर प्रताप ते । ६-३।०
श्रीरघुबीर परायन जेहिं । ७-१२७।०
श्रीराम रावन समय चरित । ६-१००।२३
श्री सहित अनुज समेत कृपा । ३-२५।१०
श्री सहित दिनकर बंस भूषन । ७-११।१३
श्रीहत भए भूप धनु टूटे । १-२६२।५
श्रीहत भए हारि हियँ राजा । १-२५०।५
श्रीहत सर सरिता बन बागा । २-१५७।६
श्रीहत सीय बिरहँ दुतिहीना । २-११८।५
श्रुति पथ पालक धर्म धुरंधर । ७-२३।२
श्रुति पुरान कह नीति असि । ७-८६।०
श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई । ७-११६।६

सौजन्य-कुमारी वासवदत्ता, फाउण्डेशन, ५, ब्राईट स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००१९

हर हियँ रामचरित सब आए।१-११०।७
हर हृदि मानस बाल मरालं।३-१०।८
हरइ सिष्य धन सोक न हरई।७-९८।७
हरत मनोहर मीन छबि।१-३२६।०
हरद दूब दधि पल्लव फूला।१-३४५।४
हरन कठिन कलि कलुष कलेसू।२-३२५।६
हरन मोह तम दिनकर कर से।१-३१।१०
हरन सकल श्रम प्रभु श्रम पाई।७-४९।५
हरष बिबस तन दसा भुलानी।१-१४७।७
हरष बिषाद ग्यान अग्याना।१-११५।७
हरष बिषाद सहित चले।६-११८।क
हरष समय बिसमउ करसि।२-१५।०
हरष समेत बसिष्ट पद।७-१०।ख
हरष सहित एहिं आश्रम आयउँ।७-११३।९
हरषवंत सब जहँ तहँ।१-१९४।०
हरषहिं निरखि राम पद अंका।२-२३७।३
हरषि चले निज निज गृह आए।१-२८६।५
हरषि चले मुनि बृंद सहाया।१-२११।४
हरषि चले सुग्रीव तब।४-२०।०
हरषि परसपर मिलन हित।१-३०५।०
हरषि बंधु दोउ हृदयँ लगाए।१-३०६।७
हरषि भरत कोसलपुर आए।७-२।१
हरषि मिले उठि रमानिकेता।१-१२७।५
हरषि मुनीस कहेउ मृदु बानी।२-५।१
हरषि राम तब कीन्ह पयाना।५-३४।४
हरषि राम भेटेउ हनुमाना।६-६१।१
हरषि सुरन्ह दुंदुभीं बजाईं।१-२४७।५
हरषि हृदयँ दसरथ पुर आई।२-११।८
हरषित गुर परिजन अनुज।७-३।क
हरषित जहँ तहँ धाईं दासी।१-१९२।२
हरषित बरषहिं सुमन सुर।३-२०।ख
हरषित भयउ नारि भलि पाई।१-१७७।४
हरषित महतारी मुनि मन हारी।१-१९१।२
हरषित रहहिं नगर के लोगा।७-२४।४
हरषित राम चरन सिर नावहिं।६-३८।७
हरषित हृदयँ मातु पहिं आए।२-७२।३
हरषे जनकु देखि दोउ भाई।१-२४३।४
हरषे दसरथ सुतन्ह समेता।१-३२२।४
हरषे पुर नर नारि सब।१-२८५।०
हरषे बिबुध बिलोकि बराता।१-३०१।४
हरषे मुनि सब सुनि बर बानी।१-२३९।३
हरषे लखन देखि दोउ भ्राता।१-३०७।८
हरषे सब कपि सुनि प्रभु बानी।७-३।८
हरषे सब बिलोकि हनुमाना।५-२७।३
हरषे हेतु हेरि हर ही को।१-१८।७
हरषेउ राउ बचन सुनि तासू।१-१६४।७
हरि अनंत हरिकथा अनंता।१-१३९।५
हरि अवतार हेतु जेहि होई।१-१२०।२
हरि इच्छा भावी बलवाना।१-५५।६
हरि गुन नाम अपार।१-१२०।घ
हरिचरित्र मानस तुम्ह गावा।७-५२।७
हरि जन द्विज देखें जरउँ।७-१०५।क
हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी।५-१३।१
हरि जननी बहुबिधि समुझाई।१-२०१।८
हरि पद बिमुख परम गति चाहा।१-२६६।४
हरि प्रेरित जेहिं कलप जोइ।१-१७८।ख
हरि प्रेरित तेहि अवसर।५-२५।०
हरि ब्यापक सर्बत्र समाना।१-१८४।५

सौजन्य - श्री वीरेन्द्र स्वरूप कालानी, १० इण्डियन मिरर स्ट्रीट, कलकत्ता-१३

त्र

मानस - अनुक्रमणिका
आद्याक्षरी प्रथम खण्ड पूर्ण

द्वितीय खण्ड

'मध्याक्षरी'

श्रीरामचरितमानस - अनुक्रमणिका

द्वितीय खण्ड : मध्याक्षरी

अ

आ

इ

ई

उ

ऊ

ए

ऐ

कहहु नाथ अति बिमल बिबेका । १-११०।३
कहहु नाथ का करिअ उपाऊ । १-६७।८
कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ । १-२१५।४
कहहु नाथ जिमि रावन मारा । १-१०९।७
कहहु नाथ तुम्ह अंतरजामी । ३-५।९
कहहु नाथ भव भंजन भीरा । ३-४४।५
कहहु बनावन बेगि बजारू । २-५।७
कहहु बिचारि उचित का आजू । २-२७०।५
कहहु बिदेह भूप कुसलाता । २-२६९।६
कहहु बिप्र निज कथा बुझाई । ४-१।४
कहहु बुझाइ कृपानिधि मोही । ७-११४।८
कहहु बुझाइ नाथ मोहि सोऊ । १-१०८।१
कहहु बेगि का करिअ बिचारा । ६-४७।४
कहहु मोहि अति कौतुक भारी । ७-५४।२
कहहु राम रघुपति जनपालक । ७-२७।७
कहहु लालसा होहि न केही । १-३४४।४
कहहु समुझि सोइ करिअ उपाऊ । २-२५४।२
कहहु सुखेन जथा रुचि जेही । २-१८०।४
कहहु सो कथा नाथ बिस्तारी । १-४६।१
कहहु सो करत न लावउँ बारा । १-२०६।८
कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं । १-१८४।६
कहहु सो भगति करहु जेहिं दाया । ३-१३।८
कहा अनुज सन सयन बुझाई । ३-१६।२०
कहा कबिन्ह परि कहै न जाना । ७-१२४।७
कहा चलैं कर करहु बनावा । ५-३३।६
कहा जो प्रभु प्रवान पुनि सोई । १-१४९।७
कहा बिदेह नृपहि समुझाई । १-३३१।६
कहा बिबिधि बिधि ग्यान बिसेषा । ७-१६।३
कहा बोलाइ बजावहु बाजा । १-११२।६

कहा लाभ आगें सुत तोही । ७-४७।७
कहाँ रहा बल गर्ब तुम्हारा । ६-३५।६
कहाँ रामु रन हतौं प्रचारी । ६-१०२।४
कहि अस अंतरहित प्रभु भयऊ । १-१३२।२
कहि अस पेम मगन मुनि भयऊ । २-२०९।६
कहि अस बचन हँसा दससीसा । ६-२३।९
कहि असीस पूछी कुसलाई । १-३०७।२
कहि कछु लखनु बहुरि मुसुकाने । १-२७६।५
कहि कहि बिपिन बिपति अधिकाई । २-७७।६
कहि कहि स्वाद भेद गुन नामा । २-२४९।३
कहि किमि सकहिं तिन्हहि नहिं बयना । ७-८७।४
कहि गुन राम प्रबोधीं रानी । २-३०८।७
कहि जय जयति कोसलाधीसा । ६-५८।८
कहि जय जानकि जीवन रामा । २-२२४।७
कहि जय जीव सीस तिन्ह नाए । १-३३१।८
कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी । ५-२।१०
कहि न जाइ उर आनँदु जेता । १-३२२।४
कहि न जाइ कपि जूथप भीरा । ६-४।२
कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई । ५-१९।६
कहि न जाइ जस भयउ बिषादू । २-१४१।६
कहि न जाइ जस सुखु मन मोरें । १-१०४।२
कहि न जाइ जानहिं जिन्ह देखा । १-३२५।५
कहि न जाइ जेहि भाँति बनावा । १-११३।१
कहि न जाइ मन भाव सुहावनि । १-२१६।३
कहि न जाइ मनहीं मन भाई । १-३१५।४
कहि न जाइ सो दसा भवानी । ३-९।१०
कहि न जाहिं जेहि भाँति सँवारी । १-२९९।१
कहि न सकइ कछु अति अकुलाना । २-९८।४
कहि न सकइ कछु सहमि सुखानी । २-११।१

ख

ग

गनै को पार निसाचर जाती। १-१८०।३

घ

च

छ

ज

सौजन्य- श्री प्रदीप कुमार सरावगी, १ इण्डिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता-७०० ००१

थ

द

न

सौजन्य - सारस्वत समाज (कुण्डीय) कलकत्ता, पी-११ चितपुर स्पर, कलकत्ता - ७०००००७

फ

ब

भ

य

रज होइ जाइ पषान पबारें । १-३००।३
रटहिं कुभाँति कुखेत करारा । २-१५७।४
रटहु निरंतर गुन गन पाँती । ७-१।३
रति अति दुखित अतनु पति जानी । १-२४६।५
रति सत कोटि तासु बलिहारी । ३-२१।९
रथ गज बाजि बरातिन्ह साजे । १-३३८।५
रथ चढ़ि चलत भए दोउ भाई । २-१८७।७
रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराऊ । २-१८६।५
रथ बैठारेउ बरबस आनी । २-१४२।३
रथ रव बाजि हिंस चहु ओरा । १-३००।१
रथ सारथी तुरग सब खोई । ६-५०।३
रथी सारथिन्ह लिए बोलाई । १-२९८।८
रदपट फरकत नयन रिसौंहें । १-२५१।८
रन दुर्मद रावन अति कोपी । ६-८९।४
रन बाँकुरा बालिसुत बंका । ६-१७।२
रन बाँकुरे बीर अति बाँके । ६-३६।४
रन महि परे निसाचर भारे । ६-११८।१०
रन रस बिटपु पुलक मिस फूला । २-२२८।५
रन सन्मुख जा कर मन डोला । ६-७७।४
रन सन्मुख धरि काहुँ न धीरा । ६-१०३।७
रन हति राम परम पद दयऊ । १-१२३।२
रबि आतप भिन्नमभिन्न जथा । ६-११०।१६
रबि पावक सुरसरि की नाईं । १-६८।८
रबि रुख नयन सकइ किमि जोरी । २-५८।८
रबि सन्मुख खद्योत अँजोरी । ३-१०।२
रबि सन्मुख तम कबहुँ कि जाहीं । ७-७१।८
रबिकुल रबि अँथयउ जियँ जाना । २-१५३।३
रबितनुजा कइ करत बड़ाई । २-१११।२
रबिहि न दोसु देव दिसि भूलें । २-२६६।३

रमा समेत रमापति मोहे । १-३१६।३
रस बिसेष जाना तिन्ह नाहीं । ७-५२।१
रसा रसातल जाइहि तबहीं । २-१७८।२
रह न तेज तन बुधि बल लेसा । ३-२७।१०
रहइ असोच बनइ प्रभु पोसें । ४-२।४
रहइ न नीच मतें चतुराई । २-२३।८
रहइ न राम चरन अनुरागी । २-१६५।२
रहइ न सीलु सनेहु न कानी । १-६१।४
रहत न आरत कें चित चेतू । २-२६८।४
रहति करति रच्छा स्वप्रान की । ५-२९।८
रह्यो सो उभय भाग पुनि भयऊ । १-१८९।३
रहसी चेरि घात जनु फाबी । २-१६।२
रहा कनक मनि मंडपु पूरी । १-३२५।२
रहा न कोउ कुल रोवनिहारा । ६-१०३।१०
रहा न ग्यानु न धीरजु लाजा । २-२७५।७
रहा बालि बानर मैं जाना । ६-२०।४
रहा बिबाहु चाप आधीना । १-२८५।७
रहा हृदयँ भरि पूरि उछाहू । १-३५३।१
रहहिं एक सँग गज पंचानन । ७-२२।१
रहहिं दरस जलधर अभिलाषे । २-१२७।६
रहहिं धीर तिन्ह कै जग लीका । ३-३७।११
रहहिं न जतन किए रघुनाथा । २-१६५।३
रहि जनु कुअँरि चित्र अवरेखी । १-२६३।४
रहि न जाइ बिनु किएँ बरेषी । १-८०।३
रहि न सकइ हरि भगति बिहाई । ७-११८।६
रहि पूरि धुनि चहुँ ओर । ६-१००।५
रहि गए कहत न खाटी मीठी । १-२८९।५
रहित निसाचर करिहहिं धरनी । ३-२१।४
रहिहउँ निकट सैल पर छाई । ४-११।८

सौजन्य- श्री दुर्गादत्त सिंह, ११ काशीपुर रोड, कलकत्ता-७०० ००२

ल

व

श

ष

स

सो निस्तरइ तुम्हारेहिं छोहा ।४-२।२
सो नृप अवसि नरक अधिकारी ।२-७०।६
सो प्रथमहिं मैं तुम्हहिं सुनावा ।७-११२।८
सो प्रथमहिं हति ताहि नसावा ।७-१०५।९
सो प्रभु जन कर प्रीति परीछा ।६-१०१।३
सो प्रभु मैं देखब भरि नयना ।५-२०५।८
सो प्रसादु जन पावै देवा ।२-३००।४
सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा ।२-१०१।८
सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि ।७-५५।१
सो प्रिय जाकें गति न आन की ।३-९।८
सो पुलस्ति मुनि जाइ छोड़ावा ।६-२३।१६
सो फलु पायउँ कीन्हेउँ रोसा ।३-२८।३
सो फलु भली भाँति हम पावा ।१-१०८।४
सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राचा ।१-२३५।८
सो बरनै असि मति कबि केही ।१-२८८।४
सो बल तात न तोहि देखायउँ ।६-७१।८
सो बासरु बिनु भोजन गयऊ ।२-३२१।३
सो बासरु बीतेउ बिनु बारी ।२-२७६।७
सो बितानु तिहुँ लोक उजागर ।१-२८८।५
सो बिनु श्रम भवसागर तरिही ।६-२।४
सो बिनु संत न काहू पाई ।७-११९।१८
सो बिलोकि सुरनायक मोहा ।१-२८८।८
सो मम भगति भगत सुखदाई ।३-१५।२
सो माया प्रभु सों भय भाखे ।१-१९९।४
सो मुख लाख जाइ नहिं बरनी ।२-१७०।१
सो मुदमंगलमय रितुराजू ।१-४१।३
सो मूरुख जो करन चह लेखा ।४-२१।१
सो मैं हतब कराल कृपाना ।६-४१।७
सो मोहि देहु दास सुखदाई ।३-१०।२५

सो श्रम जाइ न कोटि उपाएँ ।१-१०।५
सो श्रम बादि बाल कबि करहीं ।१-१३।८
सो सतसंग करउ मन लाई ।१-३८।८
सो सनेहु सुखु नहिं कथनीया ।१-२४१।६
सो सपनेहुँ सुख सुगति न लहहीं ।२-१६८।४
सो सब करहिं बेद प्रतिकूला ।१-१८२।५
सो सबु करै मोर मत एहू ।२-२९५।५
सो सब कहिहउँ मति अनुसारा ।१-१४०।६
सो सब जनु पहिलेहिं करि रहेऊ ।१-१८२।१
सो सब तोहि सुनाइहि सोई ।६-२०।९
सो सबबिधि तुम्हसन भल मानिहि ।२-१७४।७
सो सब भयउ दरस तव पायउँ ।७-६३।१
सो सब भाँति घटिहि सेवकाई ।२-२५७।५
सो सब माया जानेहु भाई ।३-१४।३
सो सबु सहिअ जो दैउ सहावा ।२-२४५।६
सो सरूप नृपकन्याँ देखा ।१-१३३।७
सो साजुज्य मुक्ति नर पाइहि ।६-२।२
सो सुख उमा जाइ नहिं बरना ।४-१।५
सो सुग्रीव केर लघु धावन ।६-२२।९
सो सुग्रीव दास तव अहई ।४-३।२
सो सुधि राम कीन्हि नहिं सपनें ।१-२८।२
सो सुनि तमकि उठी कैकेई ।२-७८।१
सो सुनि रावन भयउ दुखारा ।६-३४।१२
सो सुनि समुझि सहिउँ सब सूला ।२-२६१।३
सो सुनु उमा सहित अनुरागा ।७-५६।४
सो सुभ उमग सुखद सब काहू ।१-४०।५
सो सेवकु लखि लाज लजाई ।२-२६८।५
सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी ।१-२०३।५
सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाईं ।२-१७७।१

सौजन्य- डॉ० उषा द्विवेदी, ३० अपर चितपुर रोड, कलकत्ता-७०० ००७

ह

त्र

ज्ञ

मानस अनुक्रमणिका

मध्याक्षरी (द्वितीय खण्ड) पूर्ण

सौजन्य- श्री महावीर प्रसाद नारसरिया, ५४/४ सी, स्ट्राण्ड रोड, कलकत्ता-६